स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पी-एच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा

“गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री विमर्श के संदर्भ में”

शोधछात्रा

वैशाली शिवाजीराव श्रीमंडळे

एम.ए., बी.एड., सेट

शोधनिर्देशक

डॉ.मनोहर भंडारे

एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., पी-एच्.डी., सेट

सहाय्यक प्राध्यापक,

हिंदी विभाग

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर

जि.लातूर 413517

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

जून - 2017

“गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री विमर्श के संदर्भ में”

प्रास्ताविक :

स्त्रीकेंद्री दृष्टि से स्त्री के जीवन के संदर्भ में स्त्री प्रतिमा को प्रतिबिंबित करना स्त्री विमर्श कहलाता है। स्त्री विमर्श एक विचारधारा है जिसमें पुरुषीय मानसिकता से मुक्ति का आगाज है। इक्कीसवीं सदी के अंतिम दशक में स्त्रियों के प्रश्नों पर गंभिर चिंतन हुआ। विश्वभर के बुद्धिजिवियो, समाजसुधारकों तथा राजनीतिज्ञों में चर्चा शुरु हुई। ऐसा नहीं कि इसके पूर्व इस विषय पर चर्चा नहीं होती रही। भारत में सन् 1850 में महात्मा जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव रखी। उन्हीं के प्रभाव से ताराबाई शिंदे ने ‘स्त्री-पुरुष तुलना’ जैसा वैचारिक ग्रंथ लिखा। साथ ही हिंदी में महादेवी वर्मा की ‘शृंखला की कडियाँ’ नामक निबंध संग्रह स्त्री विमर्श का माणदंड है। पाश्चात्य देशों में सीमोन द बुआ के ग्रंथ ‘दि सेकण्ड सेक्स’ को नारी मन का बायबल कहा जाने लगा आदि सारी घटनाओं से प्रभावित होकर स्त्री को अपने ‘स्व’ के अस्तित्व की पहचान होने लगी जिसमें स्त्री अस्मिता और उसके अस्तित्व की खोज होने लगी। वैसे स्त्रीवादी पाश्चात्य चिंतक कहती है- ‘स्त्री जन्मत: स्त्री नहीं होती स्त्री को स्त्री बनाया जाता है।’ (सीमोन-द-बुआ)

स्त्रीवाद में दुय्यमत्व को नकार कर स्वतंत्र निर्णय प्रक्रिया का स्वीकार कर स्त्री मुक्ति की बात कही है। जिसमें रुढि परंपरा और पारंपरिक मिथकों को नकार कर स्त्री मिथकों की स्थापना है। अत: पूर्व और पश्चिम में स्त्री विचार पर गंभिर मंथन हुआ। जिसका परिणाम हिन्दी साहित्य पर हुआ और कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, पद्मा सचदेव, मृणाल पाण्डेय, गीतांजलि श्री आदि ने स्त्रीवादी साहित्य लेखन किया है। ।।

गीतांजलि श्री का कथा साहित्य अपने आप में विशेष है। गीतांजलि श्री ने पिछले पन्द्रह सालों से साहित्य में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। उनके साहित्य की सबसे बडी विशेषता यह है कि ‘ऑब्जेक्टिव’ और ‘सब्जेक्टिव’ तार्किक क्रम को तोडता है।

कथाजगत में उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से स्त्री की सूक्ष्म संवेदना को उभारने का प्रयास किया है। कथा साहित्य में सीधी-साधी मानसिकता के साथ-साथ सादगी से भरा लेखन कार्य होने की वजह से पाठक मन को ये कहानियाँ अपनी लगती है। उनके 'माई' उपन्यास में माई का चित्रण बखूबी से हुआ है। 'तिरोहित' उपन्यास रहस्यमय छत की कहानी बताता है। एक ऐसा अदृश्य का अस्तित्व बयान करता है जो उस घर में रहकर भी शून्य है बल्कि उनका अस्तित्व ही नहीं वह तो हाड़-मांस का एक पुतला है। परिवार में है उस औरत का स्थान उसकी अहमियत उपन्यास में में बताई गई है। 'हमारा शहर उस बरस' में दंगों में छिडी मानसिकता का चित्रण और कठिण समय में डरावनी सच्चाई का साक्षात्कार कराती कथा उपन्यास में मिलती है।

मातृत्व भावना का विद्रोह 'खाली जगह' उपन्यास में है। अपने मरे हुए बेटे के बच्चे को लेकर विद्रोह करनेवाली एक बच्चे की कहानी का सच्चा दस्ताऐवज है। एक शहर के विश्वविद्यालय में फटे बम में बच्चे तलाश की है। इसमें एक मातृत्व भाव है। पुरुष सत्ता को तोडने की आकुलाहट 'तिरोहित' उपन्यास में मिलती है। 'स्व' का सुख-दु:ख उसका सच्चा यथार्थ सामाजिक संदर्भ में साथ सामने आता है जो 'स्व' का न रहकर समाज का हो जाता है। 'तिरोहित' में स्त्रियों के घरेलु जीवन की अनुभूतियों को सच्चाई के साथ उकेरा है। पुरुषसत्ता के वर्चस्ववादी व्यवस्था ने बेजुबान कर दिया है। इनके कथासाहित्य में स्त्री विमर्श और उत्तर आधुनिकता के कई बिंदू भी देखने को मिलते हैं। स्त्री चेतना की दस्तक 'तिरोहित' उपन्यास है। पुरुष वर्चस्व से लादे गए मातृत्व का विरोध करने वाली स्त्री का चित्रण किया गया है। पुरुष सत्ता के अन्याय के खिलाफ ललन और चच्चो स्त्री पात्र स्त्री चेतना को रेखांकित करता है।

गीतांजलि श्री के कहानियों में भी स्त्री विमर्श की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है। कुछ कहानियों में शिक्षित वर्ग को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी है। स्त्री स्वातंत्र्य, नि:सहायता का दुख हमारी जिंदगी की बहुरुपी असलियत है। 'अपने पराये' कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों

के आपसी मनमुटाव का चित्रण मिलता है । पुराने बंधनों तो तोडती स्त्री का चित्रण ‘दहलीज’ कहानी में मिलता है। ‘रिश्ता’ कहानी में आपसी रिश्तों की अहमीयत और घर परिवार को जोड़कर रखने वाली स्त्री का चित्रण है। गीतांजलि श्री के कथासाहित्य में स्त्री विमर्श के विभिन्न बिंदुओं पर गंभीर और मौलिक चिंतन किया है।

विषय चयन की प्रेरणा :

मुझे विश्वविद्यालयीन जीवन से ही कथासाहित्य के प्रति रुचि रही है। इसी दौरान गीतांजलि श्री का ‘तिरोहित’ उपन्यास पढ़ने में आया जिससे मैं प्रभावित हुई। इसके पश्चात उनकी कई रचनाओं को पढ़ा और मैंने निश्चित किया की गीतांजलि श्री के कथा साहित्य पर शोध कार्य करे। मार्गदर्शक डॉ.मनोहर भंडारे जी से विचार विमर्श कर ‘गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री विमर्श के संदर्भ में’ विषय का चयन हुआ।

विषय का महत्त्व :

गीतांजलि श्री के कथा साहित्य की स्त्री विमर्श के दृष्टि से अनुसंधान हो समय की माँग है क्योंकि इसके पूर्व प्रस्तुत विषय का अनुसंधान नहीं हुआ। स्त्री समीक्षा पद्धति से गीतांजलि श्री के साहित्य का मूल्यांकन आवश्यक है क्योंकि स्त्रीवादी साहित्य पारंपरिक समीक्षा मापदंड को नकारता है जिसका साहित्य क्षेत्र में विशेष महत्त्व है। प्रस्तुत अनुसंधान शोधार्थी तथा समाजपयोगी होगा यही इसकी महत्ता है।

नारी चेतना, नारी अस्मिता को गंभीरता के साथ व्यक्त करना यही इस अध्ययन का सफल श्रेय होगा। गीतांजलि श्री के कथा साहित्य को सामाजिक संरचना को तथा परिवेशगत परिस्थितियों का गंभीरता से अध्ययन कर स्त्री की स्थिति को दर्शाना विमर्श के दृष्टि से एक सफल कार्य होगा। गीतांजलि श्री के कथा साहित्य का अध्ययन अपने आप में विशेष प्रकार की उपलब्धि होगी।

उद्देश्य :

1) स्त्री विमर्श की अवधारणा और पृष्ठभूमि समझना।

2) गीतांजलि श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझना।

3) स्त्री विमर्श के संदर्भ में गीतांजलि श्री के कथा साहित्य का मूल्यांकन करना।

4) गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में स्त्री अस्मिता की भाषा को समझना।

5) गीतांजलि श्री जैसी स्त्रीवादी लेखिका के रचनातंत्र को समझना।

अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन :

आज के वर्तमान समय में अनुसंधान करते समय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययना करना शोध के लिए आवश्यक माना जा रहा है क्योंकि साहित्य केवल साहित्य नहीं होता वहाँ समाज का अन्तर्संबंध होता है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में गीतांजलि श्री के कथासाहित्य को समझना हो तो सामाजिक संरचना के साथ समाज में निहित रुढि परंपरा में बंधिस्त स्त्री की परिस्थिति को समझना होगा और तभी स्त्री विमर्श के कसोटी में गीतांजलि श्री की स्त्री का सच्चा रुप समझ सकते हैं। इसलिए प्रस्तुत शोध का अध्ययन करते समय समाजशास्त्र, मानसशास्त्र तथा मानववंशशास्त्र का गंभीर अध्ययन करना है। इसलिए प्रस्तुत शोध अंतर्विद्याशाखीय शोध में आता है।

कार्यरत अनुसंधान :

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के अंतर्गत शोधछात्रा बालिका कांबळे ने शोधनिर्देशक प्रो.जोगेंद्रसिंह बिसेन जी के मार्गदर्शन में “गीतांजलि श्री के कथासाहित्य का अनुशीलन” विषय पर शोध कार्य कर रही है।

विषय की मौलिकता :

मेरी जानकारी के अनुसार प्रस्तुत शोध के पूर्व “गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री विमर्श के संदर्भ में” विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ। अत: प्रस्तुत विषय चयन में मौलिकता

है। प्रस्तुत शोध में विभिन्न शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। जैसे- ऐतिहासिक, सामाजिक, वैज्ञानिक पद्धति का।

विषय व्याप्ति और सीमा :

किसी भी सुचारु कार्य के लिए उसकी निश्चित सीमा और सुनियोजन होना आवश्यक होता है। इसी कारण मैंने स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर गीतांजलि श्री के कथासाहित्य तक सीमित रखा है।

अनुसंधान की दृष्टि से मैंने इस शोध प्रबंध को निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है। वे अध्याय निम्नांकित है-

प्रथम अध्याय :-

स्त्री विमर्श : अवधारणा और स्वरूप

1.1 स्त्री विमर्श : अर्थ, स्वरुप एवं अवधारणा

1.1.1 अर्थ

1.1.2 स्वरुप

1.1.3 अवधारणा

1.1.4 विकास

1.1.5 पृष्ठभूमि

1.2 स्त्री विमर्श के विविध आयाम

1.2.1 राजनितिक आयाम

1.2.2 सामाजिक आयाम

1.2.3 आर्थिक आयाम

1.2.4 धार्मिक आयाम

1.3 स्त्री विमर्श समाज और साहित्य

1.3.1 स्त्री विमर्श और समाज

1.3.2 स्त्री विमर्श और साहित्य

1.4 स्त्री विमर्श की वैचारिक परंपरा

1.4.1 भारतीय परंपरा

1.4.2 पाश्चात्य परंपरा

1.5 स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य

1.6 स्त्री विमर्श लेखन की परंपरा

1.6.1 काव्य परंपरा

1.6.2 उपन्यास परंपरा

1.6.3 आत्मकथा परंपरा

1.6.4 निबंध परंपरा

1.6.5 नाटक परंपरा

1.6.6 वैचारिक लेखन परंपरा

द्वितीय अध्याय :-

गीतांजलि श्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 व्यक्तित्व

2.1.1 जन्म

2.1.2 शिक्षा

2.1.3 विवाह

2.1.4 परिवार

2.1.5 मित्र

2.1.6 रुचियाँ

2.1.7 सम्प्राप्ति

2.1.8 पुरस्कार तथा सम्मान

2.1.9 स्नातक के समय आयी कठिनाईयाँ

2.1.10 वैचारिक प्रभाव

2.2 कृतित्व

2.2.1 कहानी साहित्य

2.2.2 उपन्यास साहित्य

2.2.3 जीवनी साहित्य

2.2.4 संपादन

2.2.5 साहित्यिक विशेषताएँ

तृतीय अध्याय :-

गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री विमर्श के संदर्भ में

3.1 स्त्री प्रतिमा

3.2 'स्व' का एहसास

3.3 स्त्री देह और मन पर उसी का अधिकार

3.4 सेक्स एक जैविक प्रक्रिया

3.5 धर्म की पाबंदी ही गुलामी का हथियार

3.6 स्त्री केन्द्री लेखन

3.7 पौराणिक मिथकों की आलोचना

3.8 स्त्रीवादी मिथकों की स्थापना

3.9 विवाहसंस्था पर प्रश्नचिह्न

3.10 प्रेम स्त्री के जीवन में सबकुछ

3.11 शरीर की जैविक प्रक्रिया

3.12 अनुभव संकीर्णता का नकार

3.13 अनिमा और अनिमस प्रतिमा

3.14 स्त्रीकेंद्री पाठ का पठन

3.15 पितृसत्ताक संस्कृति का नकार

3.16 स्त्रीवादी संहिता

3.17 स्त्री प्रतिमा के उदात्तीकरण का नकार

3.18 आर्थिक आत्मनिर्भरता

3.19 स्त्रीवादी पाठ का पठन

3.20 सृजनकर्ती स्त्री प्रतिमा

3.21 मर्यादा को तोड़ती स्त्री

3.22 प्रतिरोध की संस्कृति

3.23 मुक्ति के लिए छटपटाहट

3.24 मातृत्व का स्वीकार

चतुर्थ अध्याय :-

गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री शरीरकेंद्री अनुभवविश्व के संदर्भ में

4.1 स्त्री देह और शुभ-अशुभ कल्पना

4.2 जैविक प्रक्रिया पर धर्म का प्रभाव

4.3 स्त्री देह और मन पर उसी का प्रभाव

4.4 काम और नैतिकता

4.5 स्त्री देह

4.6 लैंगिकता और शरीरकेंद्री मानसिकता

4.7 जैविक अनुभव और संस्कृतिनिष्ठ दृष्टि

4.8 मातृत्व और सामाजिक संकेत

4.9 स्त्री देह और सौंदर्य

4.10 शरीर स्त्री का अधिकार पुरुष का

4.11 वंश तथा वारिस की कल्पना

4.12 शरीर अनुभव का साक्षात्कार

4.13 देह और मन का अंर्तसंबंध

4.14 देह और मन की समरुपता

4.15 स्त्री देहनिष्ठ स्वानुभूति

4.16 भिन्नलिंगी आकर्षण

4.17 मासिक धर्म और मातृत्व का अनुभव विश्व

4.18 क्या स्त्रीदेह ही विकास की रुकावट

4.19 देह से निर्मित दुय्यमता का नकार

4.20 गर्भधारणा के समय का मनोविश्व

4.21 स्त्री निष्ठ भूमिका और स्त्री देह

4.22 पुरुषित दृष्टि और स्त्री देह की प्रतिमा

4.24 वात्सल्य

पंचम अध्याय :-

गीतांजलि श्री का कथासाहित्य : स्त्री अस्मिता और भाषा विमर्श

5.1 पुरुषकेंद्री व्याकरण का नकार

5.2 स्त्री केंद्री भाषिक अभिव्यक्ति

5.3 लिंगभेद और भाषिक विशिष्ठता

5.4 मिथक और भाषा

5.5 अनेकार्थवाचक शब्द

5.6 सांकेतिक भाषा

5.7 स्त्री विशिष्ट शैली

5.8 स्त्री प्रतिमा और भाषा भेद

5.9 प्रथम पुरुषी सर्वनाम का अभाव

5.10 स्त्रीवाचक शब्दसमूह

5.11 प्रश्नार्थक भाषाशैली

5.12 सहजसूचकता

5.13 गपसप

5.14 स्त्रीलक्षी भाषाशैली

5.15 पुरुष नियंत्रित अभिव्यक्ति का नकार

5.16 पत्रात्मक निवेदनशैली

5.17 सत्ताधिष्ठित द्विअर्थी शब्द का नकार

5.18 शरीर निष्ठ अनुभव का भाषिक रुप

5.19 लघु वाक्य रचना की भाषा

5.20 स्त्री स्वभावनिष्ठ भाषा

5.21 गद्य की भाषा में गेयता

5.22 अन्य भाषा का प्रभाव

षष्ठम् अध्याय :-

उपसंहार

- **आधार ग्रंथ**

कहानी संग्रह

1) गीतांजलि श्री - ‘अनगूँज’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1991

2) गीतांजलि श्री - ‘वैराग्य’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1999

3) गीतांजलि श्री-‘मार्च माँ और साकुरा’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

4) गीतांजलि श्री-‘प्रतिनिधि कहानियाँ’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010

5) गीतांजलि श्री-‘यहाँ हाथी रहते थे’, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012

उपन्यास साहित्य

1) गीतांजलि श्री-'माई', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1993

2) गीतांजलि श्री-'हमारा शहर उस बरस', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1998

3) गीतांजलि श्री-'ख़ाली जगह', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2006

4) गीतांजलि श्री-'तिरोहित', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007

- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ठ

शोधछात्रा *शोध-निर्देशक*

वैशाली शिवाजीराव श्रीमंडळे **डॉ.मनोहर भंडारे**